thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 50, 19/22 मार्च 2015 तदनुसार 9 चैत्र सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य समाज स्थापना दिवस का सन्देश

ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

21 मार्च 2015 को आर्य समाज स्थापना दिवस आ रहा है। यह दिवस आर्य समाज की सफलताओं और विफलताओं की जांच पड़ताल करके अपनी त्रुटियों पर मनन करके उनको दूर करने और अपने आपको सर्वात्मना आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पण करने का संकल्प लेने का दिवस है। आर्य समाज ने देश और मानव समाज की धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनैतिक काया पलटने का सफल और स्तुत्य कार्य किया है। यह पर्व मुख्यत: आत्म निरीक्षण करने और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का व्रत लेने का भी आह्वान करता है। इस दिन सर्वप्रथम उन महापुरूषों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करना चाहिए जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और यश वृद्धि का कारण बनें। जो आर्य समाज के लिए जिए और मरे। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अपने आदर्शों और राष्ट्र की रक्षा के लिए जितना त्याग किया, कष्ट सहन किए और बलिदान दिए हैं उतने आधुनिक युग में शायद ही अन्य किसी धार्मिक संगठन ने दिए हों। उनकी तपस्या का यह फल हुआ कि आर्य समाज एक जीवित शक्ति बना।

आर्य समाज वैदिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। जिसमें व्यक्ति के सर्वतोमुखी उत्थान की योजनाएं विद्यमान हैं। चाहे वह वैयक्तिक हो वा सामाजिक, लौकिक हो वा पारलौकिक, राजनैतिक हो या आध्यात्मिक। इस विचारधारा ने एक नूतन विचारधारा को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप धार्मिक मान्यताओं में बुद्धि का प्रवेश हुआ। सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियां और कुरीतियां नष्ट हुईं, मानसिक दासता के बन्धन ढीले हुए और लोग प्रत्येक क्षेत्र में सुधार की परिभाषा में सोचने और बोलने लगे।

आर्य समाज के समक्ष इस समय जो सबसे बड़ा कार्य है वह है वैदिक विचारधारा की रक्षा और उसका प्रचार-प्रसार करना। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों और मन्तव्यों की स्थापना के लिए इस समाज की स्थापना की थी उन उद्देश्यों और मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करना आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। जिस प्रकार आर्य समाज ने आजादी से पूर्व राष्ट्र सेवा का कार्य किया है उसी प्रकार वर्तमान में भी समाज में फैल रही बुराईयों को दूर करने में आर्य समाज को अपना योगदान देना चाहिए। आर्य समाज ने देशवासियों को समष्टि रूप से सोचने का सर्वप्रथम पाठ पढाया है। आर्य समाज के सदस्यों ने सार्वजनिक सेवा और लोक कल्याण के क्षेत्र में विशिष्ट मर्यादाएं स्थापित की हैं। आर्य जनों ने सत्य रक्षा, सुधार कार्य और संगठन की दृढ़ता की दिशा में जो कार्य किया वह सराहनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज एक महान् आध्यात्मिक उफान है जो पौराणिक हिन्दू मत को वेदाभिमुख करके उसकी अनिश्चितता और त्रुटियों में क्रान्तिकारी सुधार लाकर उसे जीवन की पवित्रता, सादगी तथा स्वतन्त्र आर्य जीवन एवं विचारधारा की सर्वतोमुखी प्रेरणा के साथ जोड़ने वाला है। महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद और जीवन के प्रत्येक अंग के लिए सुनिश्चित आचार पद्धति एवं व्यवस्थित धार्मिक अनुष्ठान के साथ आध्यात्मिक त्यागवाद का प्रचार किया। आर्य समाज को बहुत पुराने और अत्यन्त सम्मानित अर्थात् वेदादि सत्शास्त्रों पर आधारित सुनिश्चित धर्म को प्रदान करने का श्रेय प्राप्त है।

21 मार्च 2015 को आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुए हम आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने का संकल्प लें। आर्य समाज की विचारधारा का जन-जन में प्रचार-प्रसार करते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास करें। वैदिक विचारधारा का जन-जन में प्रचार हो यही हमारे हृदय की भावना होनी चाहिए।

नवसम्वत-नव वर्ष के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

नववर्ष-नवसंवत्सर 2072 चैत्र सुदी प्रतिपदा दिनांक 21 मार्च 2015 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि संवत 1960853116 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी संवत 2072 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा	प्रेम भारद्वाज
सभा प्रधान	सभा महामंत्री
सुधीर कुमार शर्मा	अशोक पुरथी एडवोकेट
सभा कोषाध्यक्ष	रजिस्ट्रार आ.वि.परिषद

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन
चौक किशनपुरा, जालन्धर।

thearyasamaj.org

आर्य समाज स्थापना दिवस

-ले० प्राचार्य भद्रसेन जी दर्शनाचार्य-होशियारपुर

कक्षा के कक्ष से,

स्वतन्त्र- गुरु जी! आज डाक में आपके पास बहुत बड़ा विज्ञापन आया है। इसका अर्थ है कि बड़े समारोह के साथ स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। यहाँ स्थापना शब्द का क्या भाव है ?

प्राध्यापक- किसी संगठन की स्थापना का यहाँ भाव है-बनाना। जैसे कि यज्ञ में अग्नि का आधान होता है, वहां अग्नि को रखकर जलाया जाता है। आर्यसमाज की स्थापना का इस अवसर पर अभिप्राय है, कि आर्यसमाज के विचारों की ज्योति सदा जलती रहे। इसीलिए ही आर्य समाज के सदस्य अपने सत्संगों में जयघोष करते हैं, कि ''वेद की ज्योति-जलती रहे''। अमेरिकन दार्शनिक विद्वान एण्ड्रयूड जैक्सन ने भी आर्य समाज की अग्नि से उपमा दी है।

सोमेश- यह स्थापना दिवस कुछ जन्म दिन जैसा ही लगता है?

प्रा०- यह ठीक बात है, कि यह सारा आयोजन जन्म दिन जैसा ही है। जैसे जन्म दिन पर उस सुलक्षणी घड़ी का स्मरण करते हैं। जब किसी को इस कर्मभूमि पर अनोखा चोला प्राप्त हुआ था। उस पर हमारे यहाँ जात कर्म के उस अंश का स्मरण किया जाता है। जिसमें जीवन के उद्देश्य और साधन का संकेत है। ठीक इसी प्रकार आर्य समाज के स्थापना-दिवस पर उस काल की परिस्थितियों और भावनाओं को जहां स्मरण किया जाता है, वहां आर्यसमाज की रीति-नीति और कार्यक्रम पर भी विचार होता है।

निकष- जात कर्म पर कुछ स्पष्ट प्रकाश डालें, तो और भी अच्छा हो ?

प्रा०- जात का अर्थ है पैदाइश, उत्पत्ति उस अवसर पर उत्पत्ति, सफाई की दृष्टि से जहां बहुत कुछ होता है, वहां जन्म का क्या उद्देश्य है और इसको कैसे साधा जा सकता है, इत्यादि प्रक्रिया का विधि-विधान जातकर्म से संकेतित होता है।

इस सबको समझने-समझाने के लिए वहां अनेक मन्त्रों का उच्चारण होता है। उनमें से एक मन्त्र है-

अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव।
वेदो वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम्।।

मन्त्र ब्राह्मण 1.5.18

इसका अभिप्राय है कि - यह जीवन शरीर, मन, आत्मा का समूह रूप है। अतः जीवन लक्ष्य की सिद्धि के लिए शिशु का देह पाषाण, वज्र सदृश घृत जैसा पुष्ट, मन मधु जैसा मधुर बुद्धि परशु सी तीखी और आत्मा सोने के समान निखरी-चमकीली हो। अर्थात् शारीरिक समृद्धि, बौद्धिक विकास और आत्मिक निखार से ही जीवन सफल होता है। अतः यही जीवन का लक्ष्य है और सबकी सदा यही आकांक्षा भी होती है। अतः तब इन भावनाओं की अभिव्यक्ति और विचार के लिए जन्म दिन का आयोजन एक उपयोगी परम्परा बन जाता है।

दूसरी विशेष बात यह है, कि जात कर्म एक संस्कार है, और यहां संस्कार का सीधा सा अर्थ है-निखारना। जैसे वस्त्रों-भवनों के संस्कार-निखार से उनमें अनोखापन आ जाता है। ऐसे ही किसी व्यक्ति के जीवन के सर्वांगीण विकास, निखार के लिए इन जात कर्म, नामकरण आदि संस्कारों के माध्यम से जीवन के उद्देश्य और उसकी सिद्धि की प्रक्रिया को निर्दिष्ट किया जाता है। ठीक इसी प्रकार इस स्थापना दिवस के द्वारा यह स्मरण किया जाता है, कि आर्य समाज का यह उद्देश्य है। इसके साथ यह भी सोचा जाता है, कि यह भावना, उद्देश्य, लक्ष्य कैसे पूर्ण हो सकता है तथा इसकी यह रूप-रेखा और योजना है।

अजय- इस विज्ञापन से तो ऐसा लगता है, कि समारोह बड़े धूम-धाम से किया जा रहा है ? इस तरह से समारोह के आयोजन का क्या भाव है ?

प्रा०- आर्य समाज के अनेक सदस्य अपने जीवन के पूर्व दिनों को स्मरण करते हुए या अपने चारों ओर के दूसरे लोगों के जीवन को देखकर एवं तुलना करके इस अवसर पर आर्य समाज के अनोखेपन को स्मरण करते हुए अपनी प्रसन्नता को प्रकट करते हैं। तब झूम-झूम कर अपनी भावना व्यक्त करते हुए गा उठते हैं, कि-

''लहराएगी-लहराएगी खेती ऋषि दयानन्द की''

यह सब सोचने के लिए और ऐसी भावनाओं से भरकर श्रद्धापूर्वक आर्य इस समारोह को रचाते हैं।

देवदूत- इस प्रकार समारोह में बैठकर सोचने का क्या कोई विशेष अभिप्राय है ?

प्रा०- इस सारे का अभिप्राय यही है, कि बात की तह में जाना, गहरे पानी पैठना, क्योंकि छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने कहा है, ''यदेव विद्यया करोति, श्रद्धयो पनिषदा, तदेव वीर्यवत्तरं भवति'' 1,1,10 = व्यक्ति जिस कार्य को समझ, विश्वास और अपनेपन से करता है, उसी में आनन्द आता है तथा वही पूर्ण, सफल होता है, अर्थात् जिस कार्य की पूरी योजना, रूपरेखा बना कर जब वह किया जाता है। तभी वह कार्य सरलता से सिरे चढ़ता है। जैसे जिस भवन का नक्शा पहले बनवा लिया जाता है, तो उसमें फिर बार-बार तोड़-फोड़ नहीं करनी पड़ती। ऐसा भवन ही व्यवहार के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

इस समारोह के आयोजन का अभिप्राय भी यही है, कि हम मिल-बैठ कर सोचे, समझें - कि यह स्थापना जिस उद्देश्य से की गई थी और उसकी जो योजना बनाई गई थी, क्या हम उस उद्देश्य की सिद्धि के लिए क्या हम उस निश्चित योजना पर चल रहे हैं ? ऐसी स्थिति के लिए ही कहा है-

''क्या थे, क्या हो गए, क्या होंगे अभी।
आओ! मिल बैठ विचारें, ये समस्यायें सभी''

''भारत-भारती''

रजत- अच्छा हो, पहले इसी बात को स्पष्ट किया जाए, कि आर्य समाज की स्थापना कब, किसने की ?

प्रा०- आर्य समाज की राम कहानी ऋषि दयानन्द से शुरू होती है। आपका जन्म 1824 को टंकारा में हुआ- आपका बालपन का नाम मूलशंकर था। 14 वें वर्ष बालक मूल अपने पिता के साथ शिवरात्री की कथा सुनने के लिए गया। शिव और व्रत की महिमा सुनकर व्रत रखा, रात को मन्दिर में शिव पिण्डी पर चूहों को दौड़ते देखकर पिता जी को जगाया और पिता जी से अनेक प्रश्न पूछे। उन उत्तरों से जब मूल के मन को सन्तोष न हुआ तो अनुमति लेकर घर लौट आया तथा सच्चे शिव के दर्शन का व्रत लिया।

बहिन और चाचा जी की मृत्यु से वैराग्य की भावना उमड़ी और मृत्यु विजय की ठानी। जब घर में अपने विवाह की तैयारियां देखीं, तो इक्कीस वर्षीय शिक्षित, प्रबुद्ध युवक मूल एक दिन घर से निकल पड़ा। योग सिखाने वाले गुरु की खोज में लगातार 14 वर्ष जंगलों, पहाड़ों, मैदानों की खाक छानी और जहां भी योग सिखाने वाले का पता चला, वहीं मूल से, शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर पहुँचा। अन्त में मथुरा आकर ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी से लगभग तीन वर्ष अध्ययन किया। जब दयानन्द ने जीवन साधना की सिद्धि के लिए गुरु जी से विदा मांगी, तो गुरु जी ने पूर्व प्रतिज्ञाओं को परोक्ष में करके आर्षज्ञान की ज्योति जगाने की प्रेरणा देकर जीवन का कांटा ही बदल दिया।

गुरु आज्ञा के अनुसार कार्य करते हुए महर्षि ने अनुभव किया, कि केवल किसी को कुछ बता देना ही पर्याप्त नहीं। जिनके लिए वह कार्य है, उनको भी इसमें सम्मिलित करना चाहिए। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है:-

''हम और आपको अति उचित है, कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिल कर प्रीति से करें। समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।''

-समु०-11, प्र०-349

इसके साथ दूसरी आवश्यक बात यह है कि संसार सतत प्रवाह के रूप में चलता रहता है। परम्परा सदा चलती रहे, यह ज्ञानद्वीप सदा ही जल कर सीधा मार्ग दिखाता रहे। इस स्थायित्व, अमरता और परम्परा को प्रवाहित रखने के लिए 1875 में भारत की महानगरी बम्बई में महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की। (शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

चैत्र सुदि प्रतिपदा 21 मार्च 2015 से नव विक्रमी संवत् 2072 का शुभारम्भ हो रहा है। यह वर्ष समस्त भारतीय जनता , राष्ट्र के लिए ही नहीं, समस्त मानव मात्र एवं प्राणियों के लिए मंगलकारी हो। इस नव वर्ष में सभी सुखी हों, सब रोगहीन हों, सब भद्र कल्याण का दर्शन करें, किसी को भी दु:ख एवं कष्ट का सामना न करना पड़े। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार हमारा नव वर्ष विक्रमी संवत् से शुरू होता है। भारत के इतिहास में विक्रमी संवत् की अपनी अलग महिमा है। भारतीय परम्परा एवं संस्कृति इस बारे में सुनिश्चित है कि विदेशी शक् आक्रमणकारियों पर विजय करने के कारण विजयी विक्रमादित्य के नाम पर विक्रमी संवत् शुरू किया गया। देश की सौर गणना में इस सम्वत् की विशेष महत्ता है और देश के अनेक भागों में यह व्यवस्थित रूप से प्रचलित है। हमें अपने व्यक्तिगत पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में इस कालगणना का अधिकतम प्रयोग करना चाहिए। कई लोग 1 जनवरी को नववर्ष के रूप में मनाते हैं, परन्तु भारतीय परम्परा और संस्कृति के अनुसार न तो हमारा वित्तीय वर्ष इस तिथि से शुरू होता है और न ही कोई सन्देश हमें मिलता है। हमारे विक्रमी संवत् से जो नया वर्ष शुरू होता है उसमें अनेक प्रकार के उत्सव आते हैं। किसान अपनी लहलहाती हुई फसलों को देखकर प्रसन्न होते हैं। व्यापारी अपना वर्ष भर का लेखा-जोखा करके अपने बही खातों का आरम्भ करते हैं। इसलिए यह दिन हमारे लिए एक उत्सव बन जाता है। हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता के अनुसार इसी नववर्ष को मनाना चाहिए।

नव वर्ष का यह शुभ दिन आर्य समाज की स्थापना का भी दिवस है। 140 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस दिन इस अद्वितीय संस्था का शुभारंम्भ किया था। इस संस्था के शुभारम्भ से किसी ईंट पत्थर के भव्य भवन का शिलान्यास नहीं किया गया था, बल्कि इसके माध्यम से भारत को ही नहीं संसार को एक नई विचारधारा दी गईथी। उस समय देश विदेश में प्रचलित अनेक मत-मतान्तर पैगम्बरों, या विशिष्ट व्यक्तियों के नाम पर चल रहे थे, महर्षि दयानन्द ने संसार को सन्देश दिया कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इसी तरह सब मनुष्य सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहें और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। साथ ही सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सब सदा उद्यत रहें, सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस सब नियमों के निर्धारण के लिए नीति सूत्र दिया है- सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। महर्षि ने इसी के साथ यह सीख भी दी थी कि सब सत्य विद्याओं और जो पदार्थ विद्याओं के जानने का मूल स्रोत परमेश्वर है, वही परमेश्वर अजर-अमर है उसी की उपासना करें। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। आर्य समाज के नियम ही उसके पथ प्रदर्शक हैं। यदि उन नियमों पर मनसा-वाचा-कर्मणा अमल किया जाता है तो विश्व में मानवता के सन्देश का और अधिक प्रचार-प्रसार हो सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी आर्य समाजों में नवसंवत् और आर्य समाज स्थापना दिवस अवश्य मनाएं। नव संवत् हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। इसी नव वर्ष के अनुसार हमें अपने त्यौहारों को मनाना चाहिए। अपनी मानसिक गुलामी को दूर करके हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। इस नव संवत् का महत्व हम आर्य समाज के अनुयायियों के लिए और भी बढ़ जाता है, क्योंकि इसी दिन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुनर्रूद्धारक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। इसलिए जन-जन में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करने के लिए, वेदों का प्रचार-प्रसार करने के लिए इस दिवस को धूमधाम के साथ मनाएं।

भारतीय नव संवत् का महत्त्व

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है जिसे नव-संवत् कहा जाता है। इस बार भी यह नव सम्वत् चैत्र सुदि प्रतिपदा तदनुसार 21 मार्च शनिवार को मनाया जा रहा है। अंग्रेजों का नव वर्ष प्रथम जनवरी से मनाया जाता है, किन्तु हमारी सरकार का वित्त वर्ष प्रथम अप्रैल से और कृषि और राजस्व का वर्ष जुलाई से माना जाता है। अंग्रेजी नववर्ष प्रथम जनवरी के अनुसार न तो हमारा वित्तीय वर्ष शुरू होता है और न ही हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में उस दिन कक्षाएं शुरू होती हैं। न ही हम उसे अपना व्यापारिक वर्ष बनाते हैं और न ही उसके अनुसार अपने बही खाते शुरू करते हैं। न ही पारस्परिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से हम उसे अपने परिवारों में मनाते हैं। अत: हमें सदैव नव सम्वत् ही मनाना चाहिए। यह हमारे राष्ट्रीय और धार्मिक गौरव का भी प्रश्न है। विदेशी शासन गया, उसके गुलामी के बोझ को हम कब तक ढोते रहेंगे। अंग्रेजी नव वर्ष हमारे जीवन के साथ मेल नहीं खाता। शिक्षा वर्ष और सरकार का वर्ष भी प्रथम जनवरी से शुरू नहीं होता। इसलिए गुलामी के प्रतीक अंग्रेजी नव वर्ष के स्थान पर भारतीय नव वर्ष ही मनाना श्रेयस्कर है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

गुण ग्राहक बनो

-ले० शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर ढाढाबाड़ी कोटा (राजस्थान)

मनुष्य को यदि जीवन में कीर्त्ति प्राप्त करना है तो उसे अपने अन्दर कुछ गुणों का आधार करना होगा। जब तक मनुष्य में परोपकार, उदारता, सत्यता, दयालुता, पर दुःख कातरता, परस्पर सहयोग, वात्सल्य, स्वावलम्बन, न्याय प्रियता के गुण नहीं होंगे तब तक वह समाज में उपेक्षित ही रहेगा। व्यक्ति के अन्दर जितनी अधिक मात्रा में ये श्रेष्ठ गुण पायें जाएगें उतना ही अधिक वह समाज में लोक प्रिय होगा। इसलिए ऋग्वेद का यह कथन ठीक ही है कि मनुष्य जहां से जो गुण उसे मिल जाए उसे अपने जीवन में धारण कर ले। ऋ मं. 10 सूक्त 141 में कहा गया है-

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव।

प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असिनस्त्वम्।। ऋ. 10.141.1.

अर्थ- (अग्ने) हे विद्वान्। (इह) इस प्रदेश में (नः) हमें (अच्छ) उत्तम ढंग से (वद) उपदेश कीजिए। (नः) हमारे (प्रत्यङ्) सम्मुख हुए (सुमनाः) सुमनस्क (भव) होवें। हे (विशस्पते) प्रजा के स्वामीन्। (नः) हमें (प्रयच्छ) ज्ञान प्रदान कर। (त्वम्) तू (नः) हमारे लिए (धनदा) ज्ञान बल और धन बल का दाता (असि) है।

भावार्थ- इस ऋचा में विद्वान् व्यक्ति से प्रार्थना की गई है कि वह हमें ज्ञान का उपदेश करे। हमें ऐसा ज्ञान दे कि जिससे हमारा मन सदैव शुभ संकल्प वाला बने। फिर परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमें सब तरह का बल दे। वास्तव में ज्ञान के साथ साथ मनुष्य में शारीरिक बल, आत्मिक बल, मानसिक बल और धनबल का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः।

प्र देवाः प्रोत सुनृता रायो देवी ददातु नः।। ऋ. 10.141.2.

अर्थ- (अर्यमा) न्यायकारी मनुष्य (नः) हमें (प्र यच्छतु) न्याय देवे, (भगः) ऐश्वर्य वाला मनुष्य हमें ऐश्वर्य (प्र) देवे, (बृहस्पतिः) महा वेदज्ञ हमें वेदज्ञान (प्र) देवे, (देवाः) दूसरे विद्वान् लोग हमें ज्ञान (प्र) देवें। (देवी) दिव्य (सुनृता) उत्तम वेद वाणी (नः) हमें (रायः) धन (ददातु) देवे।

भावार्थ- न्यायकारी मनुष्य हमें न्याय देवें अर्थात् उनसे हम न्याय करना सीखें। ऐश्वर्य वाले मनुष्य हमें भी ऐश्वर्य देवें। वेद विद्वान् हमें वेद का ज्ञान देवे। अन्य दूसरे विद्वान् हमें दूसरे ज्ञान देवे। दिव्य वेदवाणी हमें भौतिक और आध्यात्मिक धन देवें।

भावार्थ- न्यायकारी पुरूष से हम न्याय करना सीखें। ऐश्वर्यवान् पुरूष से हम ऐश्वर्य प्राप्त करने की शिक्षा लें। वेदज्ञ से वेद का ज्ञान प्राप्त करें। दूसरे विद्वान् हमें बुद्धि दें और वेद वाणी से हम समस्त ज्ञानों के साथ भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पत्ति प्राप्त करें।

सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे।

आदित्यान्विष्णुं सूर्यं ब्राह्मणं च बृहस्पतिम्।। ऋ. 10.141.3.

अर्थ- (राजानम्) प्रकाशमान (सोमम्) योगी, (अग्निम्) ज्ञानी (आदित्यान्) वैज्ञानिकों को (विष्णुम्) व्यापक बुद्धि वाले (सूर्यम्) उत्तम कर्म के प्रेरक (ब्राह्मणम्) ब्रह्मज्ञाता (च) और (बृहस्पतिम्) वेदज्ञ को हम (अवसे) अपनी रक्षा के लिए (गीर्भिः) प्रशंसा वचनों से (हवामहे) पुकारते हैं।

भावार्थ- हम अपनी रक्षा के लिए योगी, ज्ञानी, वैज्ञानिकों, व्यापक ज्ञान वालों, उत्तम कर्म के प्रेरक, ब्रह्म ज्ञानी, वेदज्ञ को उत्तम प्रशंसा वचनों के साथ पुकारते हैं।

हम चेतन देवों के साथ ही जड़ देवों के माध्यम से भी गुणों का अर्जन करें।

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।

वातं विष्णुं सरस्वती सवितारं च वाजिनम्।। ऋ. 10.141.5.

अर्थ- हे परमेश्वर। आप (आर्यमणम्) अग्नि (बृहस्पतिम्) पर्जन्य, (इन्द्र) विद्युत (वातम्) वायु (विष्णुम्) यज्ञ (सरस्वतीम्) माध्यमिका वाक् (च) और (वाजिनम्) विभिन्न अन्नों वाले (सवितारम्) सूर्य को हमारे लिए (दानाय) दानार्थ (चोदय) प्रेरित कीजिए।

भावार्थ- हे परमेश्वर। आप अग्नि, विद्युत, वायु, यज्ञ, माध्यमिक वाक् और अन्न के उत्पादक सूर्य को हमें तत्तद् लाभों के देने के लिए प्रेरित कीजिए।

इन सब देवों से हमें अलग अलग शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

त्वं नो अग्ने अग्नि भिर्ब्रह्म यज्ञ च वर्धय।

त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय।। ऋ. 10.141.6.

अर्थ- हे (अग्ने) अग्नि स्वरूप परमात्मा। (त्वम्) तू (अग्निभिः) गतिशील शक्तियों और अग्नि आदि पदार्थों से (नः) हमारे (ब्रह्म ज्ञान) (च) और यज्ञ को (वर्धय) बढ़ा। (त्वम्) तू (नः) हमें (देवतातये) यज्ञ भावना की पूर्ति के लिए (रायः) धन के (दानाय) प्रदान करने के लिए (चोदय) प्रेरित कर।

भावार्थ- हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर। तू समस्त गतिशील शक्तियों और अग्नि आदि पदार्थों से हमारे ज्ञान और यज्ञ को बढ़ा। तू हमें यज्ञ भावना की पूर्ति के लिए अन्यों को धन देने के लिए प्रेरित कर।

इस विवरण से हमें ज्ञात होता है कि हमें सदैव श्रेष्ठ गुणों को लेकर धारण करने का उद्योग करते रहना चाहिए। इति शम्।

फाल्गुनी वासन्ती नवसस्योष्टि होलकोत्सव पर्व पर पंच कुण्डीय यज्ञ

उदयपुर 5 मार्च, आर्य समाज हिरण मगरी एवं शीतला माता पार्क विकास समिति के संयुक्त तत्वाधान में शीतला माता पार्क सैक्टर नं. 5, प्रभात नगर में फाल्गुनी नवसस्योष्टि पर्व के अवसर पर पंच कुण्डीय यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री इन्द्र प्रकाश यादव व अनन्त देव जी शर्मा रहे। आर्य समाज हिरण मगरी के प्रधान भंवरलाल आर्य ने स्वागत उद्बोधन दिया। श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य ने वैदिक काल से चले आ रहे फाल्गुनी नवसस्योष्टि पर्व के विभिन्न प्रसंगों पर प्रकाश डाले व प्रहलाद की कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा कि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है। उन्होंने रामायण में अग्निहोत्र के विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख कर घर-घर में अग्निहोत्र किए जाने का आहवान किया। श्री इन्द्रदेव पियूष ने भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। शीतला माता पार्क विकास समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती कौशल्या देवी एवं वार्ड की पार्षद श्रीमती सीमा साहू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

पंडित लेखराम आर्य पथिक का श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

पं० जी की शहीदी के उपलक्ष्य में हर वर्ष की भाँति 01 मार्च से 06 मार्च तक शहीदी सम्मेलन मनाया गया। 01 मार्च से यज्ञ के ब्रह्मा माननीय चैतन्य मुनि जी ने यजुर्वेद का परायण यज्ञ किया। इनका साथ दीनानगर मठ से आये ब्रह्मचारी ने दिया। यज्ञ के ब्रह्मा सुबह और शाम 8 बजे से रात 10 बजे तक वेदों की ओर लौट चलो तथा पं० जी की जीवनी पर अपना विचार प्रकट करते रहे, सभा से आये श्री विजय शास्त्री जी और श्री सुरिन्द्र सिंह जी गुलशन भजनों से और देश भक्ति के गीतों तथा प्रवचनों से श्रोताओं को प्रसन्न करते रहे। 6 मार्च को शामिल होने के लिए आर्य समाज दीना नगर, जंडियाला गुरु, बटाला, सुजानपुर, धारीवाल, जालन्धर पठानकोट और अमृतसर से आर्य जनों ने शामिल होकर के सारे कार्यक्रम की शोभा को बढाया। स्कूलों के बच्चों डी.ए.वी. सीनियर सैकण्डरी स्कूल वेद कौर स्कूल, दयानन्द मॉडल के स्कूल, लेखराम आर्य महिला कालेज के बच्चों ने पं० लेखराम जी के जीवन पर भजन और भाषण दिये। दीना नगर मठ से आये आचार्य स्वामी सदानंद जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया और सारे कार्यक्रम का संचालन श्री रमेश भण्डारी महामंत्री जी ने किया। बाद दोपहर ऋषि लंगर के साथ साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-रमेश भण्डारी महामन्त्री

thearyasamaj.org

शुभ नवसम्वत्सर

-ले० डॉ. सुशील वर्मा फाजिल्का

31 दिसम्बर की रात्रि को नववर्ष आगमन पर पूरे विश्व में समारोह आयोजित किए जाते हैं। मात्र इसलिए कि 2000 वर्ष बीत चुके हैं। ईसामसीह को पैदा हुए। इस नववर्ष का क्या औचित्य है ? नववर्ष किस का हुआ ? सृष्टि रचना का, संस्कृति का अथवा अन्य कारण से।

इस्लामी कालगणना तो मात्र 1431 वर्षों (हिजरी वर्ष) तक सीमित है। ईसाई 2015 वर्ष, रोमन 2763, यूनानी 3586 वर्ष, यहूदी 5775 वर्ष तुर्की 7621 वर्ष। इसी प्रकार मिश्री लोक 28674 वर्ष से अपने अस्तित्व को स्मरण किए संजोए रखा है। पारसी अपना अस्तित्व 198878 वर्ष और इस से भी प्राचीन चीनी कालगणना 9,60,02,311 वर्ष और प्राचीनतम भारतीय कालगणना जिसका इस समय 1,96,08,53,115 वर्ष चल रहा है। गर्व है हमें अपनी भारतीय संस्कृति पर।

भारतीय कालगणना मात्र प्राचीनतम ही नहीं, अपितु यह गणना-काल से सम्बन्धित और खगोल शास्त्र पर आधारित है। न यह देश विशेष, जाति विशेष से या घटना विशेष से अनुबद्ध है, यह तो प्राकृतिक, नैसर्गिक एवं उन्नत दिव्यता का उत्सव है। यह हमारा सौभाग्य है कि ऋषि मुनियों द्वारा प्रदत्त परम्परा को भारतीय समाज अपने हर पर्व पर अनुष्ठानों के अवसरों पर, व्यापारी वर्ग अपने बही-खातों में, यह गणना संकल्प रूप में दोहराते आए हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आज से 1,96,08,53,115 वर्ष पूर्व प्रथम मानव का भारत में प्रादुर्भाव हुआ। प्रथम सूर्य दर्शन से ही यह गणना प्रारम्भ हुई। भारतीय गणना के अनुसार इसी पृथ्वी पर सृष्टि की आयु 4,32,00,00,000 वर्ष है। यह गणना ऋग्वेद, यजुर्वेद, मनुस्मृति व पुराणों में एक जैसी है। बाद में विश्व के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों आर्य भट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त आदि ने इसका प्रतिपादन अपने ग्रन्थों में किया।

हमारे मनीषियों की कालगणना की विलक्षणता तो देखिए, काल की सबसे छोटी ईकाई त्रुटि है जो कि एक सैकिंड का 33,750 वाँ भाग है। चाहे हम आज विज्ञान को उच्च कोटि का मानते हैं परन्तु उनकी गणना तो आज तक भी यहाँ तक नहीं पहुँच पाई।

महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभास्य भूमिका के अनुसार सृष्टि एवं वेदों की उत्पत्ति 6 मन्वन्तर व सातवें की 27 चतुर्युगी बीत चुकी है। 28वीं चतुर्युगी के प्रथम चतुर्युगी के प्रथम 3 युग-सतयुग, त्रैता, द्वापर बीत चुके हैं और कलियुग के 5115 वर्ष समाप्त होकर नव सम्वत्सर, 21 मार्च, 2015 को प्रारम्भ होगा। कलियुग का प्रारम्भ 3111 वर्ष ईसा पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 26 मिन्ट, 30 सैकिंड पर हुआ। उस समय सभी ग्रह एक ही राशि में थे। कलियुग की अवधि 4 लाख, 32 हजार वर्ष की है। द्वापर की इससे दो गुणी, त्रेता की तीन गुणा, व सतयुग चार गुणा। सृष्टि व वेद की उत्पत्ति के व्यतीत समय की गणना इस प्रकार है।

1. 6 मन्वत्तर = 6 × 71 × 43,20,000 = 1,84,03,20,000 वर्ष

प्रत्येग मन्वन्तर 71 चतुर्युगी का होता है।

2. 27 चतुर्युगी = 27,43,20,000 = 11,66,40,000 वर्ष

1,84,03,20,000 ...(1)

11,66,40,000 ...(2)

3. सतयुग = 17,28,000 वर्ष, त्रैता = 12,96,000 वर्ष

17,28,000

द्वापर = 08,64,000 वर्ष, कलियुग = 5115 वर्ष

12,96,000

अत: कुल व्यतीत समय = 1,96,08,53,115 वर्ष

08,64,000

5115

(एक अरब, 96 करोड़, 08 लाख, 53 हजार 115 वर्ष)

1,96,08,53,115

आज हम 21 मार्च 2015 को नववर्ष का स्वागत कर रहे हैं। क्यों?

इसलिए कि आज के दिन ही (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)

1. सृष्टि रचना व वेदोत्पत्ति का शुभारम्भ हुआ।

2. प्रथम सूर्य दर्शन मानव ने इसी दिन किया।

3. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ।

4. महाराजा विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी सम्वत् यहीं से प्रारम्भ हुआ।

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज ही दिन आर्य समाज की स्थापना की। प्रथम आर्यसमाज काकड़वाड़ी (मुम्बई) में स्थापित हुआ।

6. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिवस एवं संघ स्थापना दिवस है।

7. संत झूलेलाल का जन्म दिवस आज ही है।

इतना गौरवमयी, वैज्ञानिक व खगोल शास्त्र पर आधारित नववर्ष का आगमन हम सभी हर्षोल्लास से करें। इन्हीं दिनों में प्रकृति अपनी छटा बिखेर रही होती है। पुरुष पल्लवित हो रहे होते हैं। इस अवसर पर आओ हम सभी प्रात: काल उदय होते हुए सूर्य के दर्शन कर शुभ दिन का स्वागत करें न कि रात के अन्धेरे में मद्य-पान करते हुए। हम राष्ट्रस्वाभिमान को जागृत करने वाले इस पृष्ठभूमि के पर्व पर राष्ट्र को समृद्ध व सामर्थ्यशाली बनाने का संकल्प ले। आज का दिन ही हमारी सृष्टि रचना, वेदोत्पत्ति का पर्व है, न कि 31 दिसम्बर की अर्धरात्रि का। दिन का प्रारम्भ तो सूर्य उदय से है न कि अर्धरात्रि से। आओ पराधीनता की मानसिकता को दूर कर राष्ट्रीय गौरव व स्वाभिमान को जागृत करें।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन-देहरादून में गायत्री यज्ञ सम्पन्न

15 मार्च, 2015 को प्रात: वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में गायत्री यज्ञ पूर्ण श्रद्धा व भक्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री उत्तम मुनि थे तथा मंच की शोभा के रूप में देहरादून की एक महान आध्यात्मिक हस्ती स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती विराजमान थी। यज्ञ के अनेक यजमानों में मुख्य यजमान आश्रम के यशस्वी प्रधान श्री दर्शन लाल अग्निहोत्री दम्पत्ति थे। तपोवन के वैदिक धर्म के निष्ठावान मंत्री यशस्वी श्री प्रेम प्रकाश शर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग 3 बृहत कुण्डों में किए गए यज्ञ में सम्मिलित थे।

यज्ञ के पश्चात् मुख्य प्रवचन देते हुए आर्य जगत के प्रतिष्ठित सन्यासी व यज्ञप्रेमी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द का उल्लेख कर कहा कि जो यज्ञ नहीं करता वह पाप करता है। पाप अकारण किसी को दु:ख देने को कहते हैं। अत: यज्ञ न करना पाप कैसे हो सकता है, इसका समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य श्वास लेते हैं। अन्न, जल व दुग्धादि पदार्थों से भी आवश्यक हमारे लिए वायु हैं। प्रत्येक मनुष्य व प्राणी श्वास लेता व छोड़ता है जिससे वायु प्रदूषित होती रहती है। यह ऐसा ही है कि जैसे हम पानी पीये फिर उसे उगल दें और उसे पुन: पीयें। ऐसा बार-बार करें, कुछ ऐसा ही वायु को श्वास के रूप में लेना व छोड़ना और बार-बार इसी प्रकार करने से हम दूषित वायु को ही बार-बार श्वास द्वारा लेते रहते हैं जो कि हमारे व अन्य प्राणियों के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्यों व प्राणियों का जीवन वायु पर निर्भर है। वायु जीवनदात्री है। वायु को शुद्ध करना व शुद्ध रखना आवश्यक है। वायु को शुद्ध रखने के लिए सभी गृहस्थियों को कम से कम 32 गोघृत व हवन सामग्री से आहुतियां देनी चाहिएं।

विद्वान् सन्यासी ने कहा कि हवन करना पुण्य कर्म करना नहीं अपितु पाप कर्म से बचना है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ अवश्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे वैज्ञानिकों के पास वायु को शुद्ध करने का कोई उपाय या तरीका नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि एक तोला गौ घृत से एक टन वायु शुद्ध व पवित्र होती है। विद्वान वक्ता ने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठ कार्य नहीं अपितु श्रेष्ठतम कार्य है। आयोजन की समाप्ति पर आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शनलाल अग्निहोत्री ने तपोवन आश्रम के इतिहास पर प्रकाश डाला और गायत्री यज्ञ में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। आयोजन की समाप्ति यज्ञ के ब्रह्मा श्री उत्तममुनि जी ने सभी यजमानों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

-मनमोहन कुमार आर्य

thearyasamaj.org

पृष्ठ 2 का शेष-आर्य समाज.....

मनसाराम- संस्था के नाम में आर्य शब्द क्यों जोड़ा गया अर्थात् यही नाम ही क्यों रखा गया ?

प्रा०- आर्य शब्द का सीधा सा अर्थ है- श्रेष्ठ, अच्छा, भला। हर क्षेत्र में यही प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है, कि भला ही हो। हमारा मान्य साहित्य एवं परम्परा भी साक्षी है, कि हमारे लिए प्रारम्भ से ही आर्य शब्द का प्रयोग होता आ रहा है। हमारे सभी शास्त्रों में आर्य शब्द का भरपूर प्रयोग मिलता है। अत: यह आर्य शब्द जहां सबकी सर्वत्र चाहना है, वहाँ यह शब्द स्वत: अपने लक्ष्य, योजना को भी स्पष्ट कर देता है।

रजत- प्रसंगवश समाज शब्द की भी चर्चा हो जाए ?

प्रा०- समझदारों के समूह को समाज कहते हैं। ऐसे संगठन का आर्यत्व के लिए नियमों से अनुशासित होना स्वाभाविक हो जाता है। नियमों के अनुसरण से ही शक्ति, समृद्धि, सफलता प्राप्त होती है। अत: नियम ही सर्वस्व तथा स्वास्थ्य के मूल आधार हैं।

रुपेश- ऐसे नियमों पर भी कुछ प्रकाश डाला जाए, तो 'सोने में सुहागे' वाली बात हो सकती है ?

प्रा०- आर्य समाज के दशनियम हैं, इन नियमों के माध्यम से महर्षि ने इस संगठन का उद्देश्य और उसकी सिद्धि की योजना स्पष्ट कर दी है। इन नियमों में महर्षि ने अपने शास्त्रों के सिद्धान्तों का एक सुसंगत रूप समाविष्ट कर दिया है। इसी सुसंगत रूप के प्रचार के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अत: यह सुसंगत रूप ही आर्य समाज का मूल मन्तव्य है और मन्तव्य शब्द को स्पष्ट करते हुए महर्षि ने स्व मन्तव्य-अमन्तव्य प्रकाश में कहा है- ''मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है।''

हाँ, इन दश नियमों में से पहले तीन नियमों में संगठन के दार्शनिक तत्वों, सिद्धान्तों, तत्सम्बन्धी मान्यताओं को व्यक्त किया गया है। चार और पाँच में जीवन की दृष्टि से आचरण की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। छ: से दश तक के नियमों में कार्यक्षेत्र तथा सामाजिक कर्त्तव्यों का संकेत है।

निकष- अब क्रमश: एक-एक नियम का परिचय हो जाए, तो ''गहरे पानी पैठ'' की भावना चरितार्थ हो सकती है ?

प्रा०- आर्य समाज का प्रथम नियम है- ''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है''

इसमें ईश्वर की सिद्धि के लिए दो युक्तियां दी गई हैं, इन्हीं में अन्य भी आ जाती हैं। यहां कहा है कि जिस संसार में हम रहते हैं, उसमें दो प्रकार के तत्त्व हैं, एक तो व्यवहार के पदार्थ और दूसरा इनके बर्ताव का ज्ञान। इन दोनों का आदि मूल ही ईश्वर है, सब कुछ नहीं, अत: ईश्वर मूल वस्तुओं का निर्माता, दाता और भावों का प्रेरक है, तदनन्तर मनुष्यों के प्रयास से विकास होता है। जैसे कि लोहा - ईश्वर प्रदत्त है और उसका विकास मनुष्य कृत्।

सम्पादक जी यदि लेख का विस्तार अपेक्षित हो, तो शेष नियम भी उद्धृत हो सकते हैं। द्वितीय नियम में ऐसे ईश्वर का पूर्ण रूप दर्शाया गया है। ईश्वर का यह स्वरूप युक्ति संगत और बुद्धिगम्य है। हां ऐसे गुणों वाला ही सृष्टि का संचालन कर सकता है। अन्तिम भाग में कहा है कि ऐसे शुद्ध, पूर्ण स्वरूप वाले की ही उपासना करनी चाहिए और तभी उपासना का फल उपलब्ध हो सकता है।

तृतीय नियम में संकेत है, कि ईश्वर का वह ज्ञान वेद है। जो कि सत्य विद्याओं से भरपूर है। अपने लिए सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें वेद को पढ़ना और सुनना चाहिए।

चतुर्थ नियम का भाव है, कि वेद प्रतिपादित सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। हाँ, इस नियम को जब पूर्व से बिना सम्बद्ध किए पढ़ते हैं, तो इसका भाव होता है कि काल और अपनेपन के मोह में ग्रस्त हुए बिना हर सत्य को ही सदा स्वीकार करना चाहिए।

पञ्चम नियम में कहा है, कि हमारे जीवन से सम्बन्ध रखने वाला हर क्षेत्र का प्रत्येक कार्य धर्म (वेद) के अनुकूल होना चाहिए। हां यहां धर्म की कसौटी है, सत्य-असत्य के आधार पर जांच करके किसी को स्वीकार करना चाहिए, बिना विचारे नहीं और धर्म का ही दूसरा नाम सत्य है।

छठे नियम में आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार कहा है और यह उपकार हमको शरीर, आत्मा से जुड़ी बातों व्यवस्थाओं, वस्तुओं के माध्यम से जहां करना है, वहां सामाजिक उन्नति से सम्बद्ध जागृति, अनुशासन, व्यवस्था और परार्थ भावना का भी ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इन तीनों उन्नतियों के होने पर ही किसी का पूर्ण विकास हो सकता है, अन्यथा हर व्यक्ति अधूरा ही रहेगा।

यह नियम यह सोचने के लिए भी स्वत: विवश करता है, कि इस संगठन को उन सभी उपायों, बातों को उजागर करना चाहिए, जिनसे ये तीनों उन्नतियां हो सकती हैं।

सातवां नियम है- ''सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए'' इसमें सामाजिक उन्नति की दृष्टि से कहा है- प्रत्येक को समाज के सभी सदस्यों से प्रीति-स्नेह, हित भावना से व्यवहार करना चाहिए। पर यह प्रीति सभी से धर्म के अनुसार हो जैसे कि पिता-पुत्र/पति-पत्नी परस्पर सम्बन्ध, धर्म के अनुरूप वर्तें। धर्म की मर्यादा का पालन भी यथायोग्य - पात्र के अनुरूप हो, क्योंकि सभी की रुचि, गुण, कर्म भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ स्वत: सीधी राह पर चलते हैं, तो संकेत मात्र से कुछ और कुछ दण्ड से सचेत होते हैं।

आठवें नियम में कहा है कि हम जिस भी क्षेत्र में जो भी कार्य करना चाहते हैं, वह विद्या = सही ज्ञान से ही हो सकता है, और अविद्या से विनाश बिगाड़ ही होता है। अत: विनाशक अविद्या के विनाश और सफलता, विकास-दायक विद्या की वृद्धि के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।

नवम नियम का भाव है कि मनुष्य एक विचारशील परस्परापेक्षी सामाजिक प्राणी है। अत: दूसरों की स्थिति का उस पर भी प्रभाव होता है। इसलिए केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, क्योंकि केवल स्वार्थ तक सीमित होने से व्यक्ति अनुचित भी कर बैठता है।

दशम नियम संकेत करता है, कि एक विचारधारा है कि समाज की हर व्यवस्था की कसौटी व्यक्ति है, पर दूसरों का विचार है, कि व्यक्ति हर तरह से समाज पर निर्भर है, वह समाज रूपी मशीन का पुर्जा मात्र है। इन दोनों का समन्वय करते हुए यहां निर्णय दिया है, कि हमारे जो कार्य दूसरों से जुड़े हैं, जिन का दूसरों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उन सामाजिक नियमों में सभी परतन्त्र हैं, जैसे सड़क पर चलना। हां, जिन बातों का दूसरों पर सीधा असर नहीं होता, अपने तक सीमित हैं, उन में व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार चल सकता है।

इस प्रकार इन नियमों में मानव जीवन के प्रत्येक पहलू और धर्म के सारे पक्षों (कर्मकाण्ड, विश्वास, दर्शन, आचार) का परिचय समाया हुआ है। प्रत्येक नियम का एक-एक शब्द भावपूर्ण तथा गम्भीर तत्वों से भरा हुआ। जो कि अपनी विस्तृत व्याख्या चाहता है, यहां विस्तार भय से संकेत मात्र ही किया है, हां, विशेष ज्ञान के लिए आर्य समाज के नियमों का एक अनुशीलन पढ़ा जा सकता है।

इस सारी चर्चा से स्पष्ट होता है, कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी शास्त्रों और प्रचलित धर्मों, विचारों को परखने के बाद ही मानव जाति के सर्वतोमुखी विकास के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। अत: इस दिवस का स्मरण करते हुए महर्षि के अन्त: स्थल तड़प को समझने, अपनाने का हमें सर्वदा-सर्वथा प्रयास करना चाहिए।

वार्षिक उत्सव मनाया

आर्य समाज नई मंडी, दयानन्द मार्ग (वकील रोड) मुजफ्फर नगर का 87वाँ वार्षिकोत्सव (नवसस्येष्टि महोत्सव) दिनाँक 4, 5 व 6 मार्च 2015 दिन बुधवार, बृहस्पतिवार व शुक्रवार को धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव में अनेकों सन्यासी महात्माओं के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान) के कार्यकारी प्रधान, प्रख्यात यशस्वी वैदिक विद्वान, प्रोफेसर डॉ. धर्मवीर जी तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेवसिंह बेधड़क (बागपत) ने अपने-अपने उपदेशामृत की वर्षा की। अत: अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर, धर्म लाभ प्राप्त करें।

thearyasamaj.org

शोक संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री तथा पूर्व विधायक श्री विजय कुमार साथी की माता विद्यावती का 93 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार 12 मार्च 2015 को पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनके अन्त्येष्टि संस्कार पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज तथा उपप्रधान श्री देवेन्द्र शर्मा जी ने पहुंच कर शोक संतप्त परिवार के साथ संवेदना प्रकट की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजंलि दी तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि प्रभो दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को इस शोक को सहन करने का साहस एवं धैर्य प्रदान करें।

-प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी अधिकारी तथा सदस्यगण आर्य समाज बठिंडा के वयोवृद्ध नेता लाला कुलवन्त राय अग्रवाल के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। आपका पूरा परिवार आर्य समाज के साथ जुड़ा हुआ है। आप तन-मन और धन के साथ आर्य समाज तथा अन्य संस्थाओं को सहयोग करते थे। सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की कि परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को धैर्यशक्ति प्रदान करें जिससे वे इस दारूण दुःख को सहन कर सकें।

-प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक संवेदना

बड़े दुखी मन से सूचित किया जाता है कि आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता लाला कुलवन्त राय अग्रवाल का 8 मार्च 2015 को सुबह 10:00 बजे स्वर्गवास हो गया। उनके निधन पर समूचे समाज, बठिंडा शहर, एवं आर्य समाज का बहुत क्षति हुई है। आप मार्किट कमेटी बठिंडा के चेयरमैन, म्युनिसिपल कमेटी बठिंडा के प्रधान एवं इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट के चेयरमैन रहे हैं। आपका पूरा परिवार आर्य समाज से जुडा हुआ है। आपके बड़े भाई लाला अमरनाथ अग्रवाल आर्य गर्ल्ज सीनियर सै. स्कूल के प्रधान थे। उनके बाद लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल प्रधान रहे और अब उनके सुपुत्र अनिल अग्रवाल प्रधान हैं। आर्य समाज के प्रधान श्री गौरीशंकर खनगवाल ने अपने अन्य सदस्यों समेत उनके पार्थिव शरीर पर ओ३म् का झंडा डाला। अग्रवाल साहब बहुत ही दानी व्यक्ति थे उनके संस्कार पर सारा बठिंडा शहर एवं सारे आर्य सदस्य रामबाग पहुंचे थे। उनका दाह संस्कार स्वामी सूर्यदेव जी ने पूरे वैदिक विधि से करवाया। उनके लिए श्रद्धाजंलि समारोह 20-03-2015 को ग्रीन पैलेस में होगा। आर्य समाज की ओर से 2 मिन्ट का मौन रखकर उनकी आत्मिक शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

-पी.डी. गोयल संरक्षक आर्य समाज

शोक संवेदना

आर्य समाज अहमदगढ़ एवं दयानन्द आदर्श विद्यालय अहमदगढ़ के प्रधान तथा हिन्द अस्पताल अहमदगढ़ के संस्थापक सदस्य तथा एम. डी. श्री विजय कुमार हिन्द का 5 मार्च 2015 को निधन हो गया। उनकी रस्म पगड़ी एवं अन्तिम शोक सभा दिनांक 8-3- 2015 को सम्पन्न हुई। आप आर्य समाज अहमदगढ़ और दयानन्द आदर्श विद्यालय के पिछले 30 वर्षों से प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे। आपकी देख-रेख में दयानन्द आदर्श विद्यालय ने खूब उन्नति की। शहर की सभी धार्मिक, राजनैतिक, व्यापारिक और सामाजिक संस्थाओं की वह तन-मन और धन से सेवा करते थे। उनकी शव यात्रा एवं शोक सभा में हजारों लोगों ने नम आंखों से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। रस्म पगड़ी पर नगर और इलाके की अनेक संस्थाओं ने शोक सन्देश भेजकर उनके कार्यों की सराहना की। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे यही हम सबकी कामना है।

-मनोहर लाल खुराना आर्य समाज अहमदगढ़

स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया

आर्य समाज जीरा ज़िला फिरोज़पुर ने बड़ी धूमधाम के 14.2.15 को महाऋषि दयानन्द का जन्म दिन मनाया गया। उसके बाद 17.2.15 को महाऋषि दयानन्द बोध उत्सव मनाया गया। वेद के पवित्र मन्त्रों से हवन यज्ञ पं. किशोर कुनाल पुरोहित जी ने करवाया। उसके पश्चात् वरिष्ठ आर्य समाजी ओम प्रकाश जी ग्रोवर ने स्वामी जी की जीवनी पर रोशनी डाली और ना भूतो न भविष्यति शब्द का उचारण किया कि महाऋषि दयानन्द जैसा ना कोई महापुरुष पैदा हुआ है और ना ही होगा। महाऋषि का ऋण चुकाने का संकल्प किया गया।

-सुभाश चन्द्र आर्य प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती समारोह मनाया

उदयपुर 13 फरवरी 1915 आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती समारोह पूर्वक मनायी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापडिया ने की। विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती ग्यारसी देवी आर्य, पी.एन. जायसवाल, सुश्री कृष्णा, सुमन, अंजली, गीता ने महर्षि के जीवन आधारित भजन प्रस्तुत किये। सुमीक्षा, मीना, नेहा वैष्णव ने हिन्दी तथा भावना वैष्णव ने अंग्रेजी में महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अमृत लाल तापडिया ने इस अवसर पर कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती गुरुओं के भी गुरु थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के वे प्रणेता रहे वही सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में अग्रणी थे। महर्षि ने समाधि का सुख छोड़कर भी समाज और देश हित में अपना जीवन दे दिया।

प्रारम्भ में पं. रामदयाल पं. अमन देव शर्मा के पौराहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती नाजुद बंसाली, सुश्री कुसुभ पालीवाल, मनीषा यदुवंशी, पूजा जैन, रेणु यजमान थे। प्रधान भवंर लाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन रामदयाल ने किया। अपनी अपनी बात में उद्वरण देते हुए कहा कि महापुरुषों ने हमें ढूबने से बचाया है किन्तु महर्षि दयानन्द ने हमें तैरना सिखाया।

-प्रचार मंत्री

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश में प्रवेश प्रारम्भ

आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती है। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश 01 अप्रैल 2015 से आरम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ०प्र० माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहाँ के स्नातक शिक्षक, पुरोहित तथा सैन्य, पुलिस पी०ए०सी० वन विभाग, लोक सेवा आयोग आदि विभागों में कार्यरत हैं। यहाँ पर छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष बल दिया जाता है। कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में 2 रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

भजन संध्या का आयोजन

आर्य समाज जंडियाला गुरू में नववर्ष सम्वत् 2072 एवं क्रान्तिकारी संस्था आर्य समाज के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भव्य भजन संध्या का आयोजन 22 मार्च 2015 दिन रविवार को समय 2:30 से 5:30 बजे तक किया जा रहा है जिसमें आध्यात्मिक एवं राष्ट्र भक्ति के भजनों का कार्यक्रम होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक जी, श्री वीरेन्द्र शर्मा एवं श्री कुलदीप जी के मधुर भजन होंगे। आप सबसे निवेदन है कि आप सब समयानुसार पधार कर भजनों का श्रवण करें। कार्यक्रम के पश्चात् जलपान का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से किया जाएगा।

निवेदक-आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज जंडियाला गुरू

thearyasamaj.org

बी.एल.एम. गर्ल्ज कॉलेज नवांशहर में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया

बी. एल. एम. गर्ल्ज कॉलेज में आर्य समाज नवांशहर के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रमुख अधिकारी महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, उपप्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुमार शर्मा, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस अवसर पर श्री हरचरण सिंह बैंस सलाहकार मुख्यमन्त्री पंजाब सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। समारोह का शुभारम्भ गणमान्य अतिथियों के द्वारा ज्योति प्रज्वलन से किया गया। बी. एल. एम. गर्ल्ज कॉलेज की प्रबन्धक कमेटी के सचिव श्री विनोद भारद्वाज जी ने सर्वप्रथम आए हुए अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। इस महिला दिवस में भारत की सुप्रसिद्ध सूफी गायिका डा. ममता जोशी जी ने सूफी कलाम के द्वारा उपस्थित जनता को प्रभावित किया। इस अवसर पर बी. एल. एम. गर्ल्ज कॉलेज की भूतपूर्व प्रिंसिपल श्रीमती चरणपाल कौर तसव्वुर को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभा उपप्रधान श्री देवेन्द्र शर्मा जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जहां पर नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का निवास होता है। इसलिए नारी जाति का हमेशा सम्मान करना चाहिए। सभा महामन्त्री श्री प्रेम कुमार भारद्वाज जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति को समाज में उसका अधिकार दिलाया है। नारी जाति के उद्धार का पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। हमें एक मां के रूप में , बेटी के रूप में बहन के रूप में हमेशा नारी जाति का सम्मान करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री हरचरण बैंस जी ने कहा कि किसी भी समाज का, राष्ट्र का भविष्य उस देश की नारी पर निर्भर है। आज की नारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है और पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही है। उन्होंने नारी जाति को सशक्त बनाने पर जोर दिया। कॉलेज की प्रबन्धक कमेटी के प्रधान डा. सी.एम. भण्डारी जी ने आए हुए सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, वीरेन्द्र सरीन, देशबन्धु भल्ला, ललित मोहन पाठक, कुलवन्त राय शर्मा, अरविन्द नारद, बख्तावर सिंह, जे. के. दत्ता, अमित शर्मा, अक्षय तेजपाल, भास्कर, आर्य कॉलेज लुधियाना के प्रिं. डा. आर. सी. तेजपाल, आर. के. आर्य कॉलेज नवांशहर के प्रिंसिपल डा. एस. के. बारिया, डी.ए.एन. आर्ट एण्ड क्राफ्ट कॉलेज की प्रिं. आशा शर्मा, डी.ए.एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन की प्रिं. डा. सरोज भल्ला, डब्ल्यू. एल. आर्य स्कूल की प्रिं. प्रवीण मल्होत्रा, दोआबा आर्य सी.सै. स्कूल के प्रिं. राजेन्द्र सिंह गिल, आसानन्द आर्य स्कूल की डायरैक्टर अचला भल्ला आदि अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

–विनोद भारद्वाज सचिव कॉलेज प्रबन्धक कमेटी

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज में आर्य समाज के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज की पत्रिका का विमोचन करते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, सभा उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, प्रबन्ध समिति के प्रधान सी.एम.भंडारी, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, कालेज प्रबन्ध समिति के सचिव श्री विनोद भारद्वाज एवं कालेज प्रिंसीपल मीनाक्षी शर्मा ऊपर एवं नीचे कालेज की पूर्व प्रिंसीपल को सम्मानित करते हुए अधिकारी।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।